प्रश्न - हॉब्स की संप्रभुता सम्बंधी अवधारणा का परीक्षण कीजिए।

उत्तर :- संप्रभुता से अभिप्राय उस न्यायोचित सत्ता से है, जिसके माध्यम से राज्य एकनीतिक प्रक्रिया संपन्न करने में सफल होता है। साधारण भाषा में प्रभुसत्ता का अर्थ है सर्वोच्च सत्ता, अर्थात एक ऐसी सत्ता जिसके ऊपर कोई और सत्ता न हो। यह उच्च और नियंत्रणकारी शक्ति है, जो सभी व्यक्तियों, समुदायों, वर्गों, संघों और संस्थाओं को नियंत्रित तथा नियमित करती है।

प्रभुसत्ता की स्पष्ट, तर्कसंगत और सही अभिव्यक्ति का श्रेय हॉब्स को जाता है। हॉब्स अपनी प्रमुख रचनाओं (Levinthan, 1651,) और De Cive, 1642) में संप्रभुता की चर्चा की है। लेकिन हॉब्स संप्रभुता के सिद्धान्त में की चर्चा में संप्रभुता के जनक बोदां से भी आगे निकल गये हैं। जहाँ बोदां का संप्रभु प्राकृतिक कानूनों, दैविक कानूनों अंतर्राष्ट्रीय कानूनों के अधीन है, इतना ही नहीं वह प्रभुसत्ताधारी के ऊपर नैतिक प्रतिबंध भी स्वीकार किया है।

हॉब्स ने जिस संप्रभुता के सिद्धान्त का निर्माण किया है, वह असमर्थादित है। पृथ्वी पर वह किसी भी सत्ता द्वारा मर्यादित नहीं है। उन्होंने अपने सिद्धान्त में नैतिकता को कोई स्थान नहीं दिया है। हॉब्स के अनुसार संप्रभु का निर्माण समझौते के माध्यम से होता है। वह कहता है कि, "संप्रभुता वह शक्ति है जिसके कार्यों का एक महान जनसमूह ने अपने आपको स्वेच्छापूर्वक एक संविदा द्वारा कर्ता बना लिया है और उनकी शांति तथा सुरक्षा के लिए वह उन सबके साधन तथा शक्ति अपनी बुद्धि के अनुसार प्रयोग कर सकता है"।

समझौता द्वारा प्रत्येक व्यक्ति अपने ~~अस~~ को शासित करने का अधिकार राज्य की संप्रभुता को सौंप देता है। इस समझौते में वह व्यक्ति, जिसे शक्तियाँ सौंपी गयी हैं, समझौते का हिस्सेदार नहीं है। अतः प्रभुसत्ताधारी निरंकुश ही नहीं है, अनुत्तरदायी भी है, और वह किसी मानवीय अथवा ईश्वरीय कानून से भी नहीं बँधा है। प्रभुसत्ताधारी की इच्छा ही कानून है। कानून की दृष्टि से प्रभुसत्ता की सर्वव्यापकता में हॉब्स ने किसी प्रकार की शंका प्रकट नहीं की है।

प्रभुसत्ताधारी के अधिकारों का वर्णन करते हुए हॉब्स कहता है कि प्रजा सरकार का स्वरूप नहीं बदल सकती और न ही प्रभुसत्ताधारी को हटाने के लिए ईश्वरीय कानूनों का सहारा ले सकती है। प्रभुसत्ताधारी की शक्ति वापस नहीं ली जा सकती।

Scanned with CamScanner

कोई व्यक्ति प्रभुसत्ताधारी के स्थापना का विरोध नहीं कर सकता। यदि अधिकतर लोगों ने एक व्यक्ति की प्रभुसत्ता को स्वीकार कर लिया है, तो अल्पमत को भी उसकी आज्ञाओं का पालन होना चाहिए।

प्रभुसत्ताधारी की गतिविधियों किसी तरह की अँगुली नहीं उठाई जा सकती। प्रभुसत्ताधारी द्वारा किये गए कार्य के लिए प्रजा द्वारा कोई सजा नहीं दी जा सकती। राज्य द्वारा शांति और सुरक्षा के लिए किये जाने वाले कार्यों का निर्णायक केवल प्रभुसत्ताधारी है। हॉब्स समस्त ऐसी संस्थाओं का विरोधी है जो संप्रभु की शक्ति को सीमित करने का प्रयास करती है। वह शक्ति के पृथक्करण और मिश्रित शासन व्यवस्था का भी विरोध करता है। उसके अनुसार ऐसी व्यवस्थाएँ अराजकता उत्पन्न करने वाली होती है। वह कहता है कि इंग्लैण्ड में उसके समय में होने वाले गृह युद्ध का यही कारण था, जिसकी वजह से लोग यह सोचते थे कि सर्वोच्च सत्ता राजा और संसद में विभाजित है। अतः हॉब्स सम्प्रभुता को संपूर्ण अविभाज्य और असीम मानता है।

हॉब्स के संप्रभुता की विशेषताएँ :— हॉब्स के संप्रभुता की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

i) संप्रभु सर्वशक्तिमान है। इसके कार्यों में कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकता है।

ii) वह शक्ति पृथक्करण का विरोधी है। वह स्वयं कानून बनाता है, उसकी व्याख्या भी करता है, तथा उसे लागू भी करता है।

iii) वह स्वयं कानून बनाता है, लेकिन उसे मानने के लिए बाध्य नहीं है।

iv) समझौता के बाद सारी शक्तियाँ जिसको दी जाती है, वह स्वयं समझौता का हिस्सेदार नहीं है।

v) हॉब्स की संप्रभुता कानूनी संप्रभुता है। अर्थात इसके पास कानून बनाने की सर्वोच्च सत्ता है, और वह हर प्रकार का कानून बना सकता है।

vi) संप्रभु के आदेश मानने के लिए सब बाध्य हैं, नहीं मानने पर दण्ड के भागी होंगे।

vii) प्रथा भी संप्रभुता को मर्यादित नहीं कर सकती है।

Scanned with CamScanner

viii) हाब्स की संप्रभुता निरंकुश है, वह किसी भी कानून (प्राकृतिक कानून, प्रथा, दैवीय कानून) के अधीन नहीं है। वह तानाशाह है।

ix) संप्रभुता अदेय और अविभाजित है। अर्थात वह किसी दूसरे को न ही दी जा सकती है, और न ही उसका बँटवारा हो सकता है

सम्प्रभुता की सीमायें :- हाब्स संप्रभु पर दो तरह की सीमाओं की चर्चा करते हैं — प्रथम, व्यक्ति को संप्रभु से अपने जीवन की रक्षा करने का अधिकार है। संप्रभु यद्यपि निरंकुश सत्ता है, फिर भी वह किसी की हत्या नहीं कर सकता है, संप्रभु का निर्माण जीवन सुरक्षा के लिए किया गया है।

दूसरा, संप्रभु के प्रति आज्ञाकारिता तभी तक है जब तक वह अपनी प्रजा की सुरक्षा करता है। अगर संप्रभु सुरक्षा प्रदान करने में सफल नहीं होता है, तो मनुष्य को सत्ता का विरोध करने का अधिकार है। क्योंकि सुरक्षा के लिए ही व्यक्ति सरकार के नियंत्रण को स्वीकार करता है।

हाब्स के अनुसार इन दो अपवादों के अलावा संप्रभु किसी सत्ता से नियंत्रित नहीं है।

मूल्यांकन :- हाब्स द्वारा प्रतिपादित निरंकुश एवं अपरिमित संप्रभुता के सिद्धान्त की दो दिशाओं से और आलोचना की जाती है। प्रथम, इसे कुछ लोग इसलिए ठुकराते हैं, क्योंकि उनके विचार में यह असत्य और अवास्तविक है। उनकी धारणा है कि कोई भी वास्तविक संप्रभुसत्ताधारी ऐसी निरंकुश तथा अपरिमित शक्तियाँ नहीं रखता।

वॉन (Vaughan) इस सिद्धान्त को खतरनाक और असंभव समझते हैं। वॉन के अनुसार यह एक नग्न निरंकुशवाद की स्थापना करता है। राज्य के घटकों में एकता का एकमात्र आधार सामान्य भय, प्राकृतिक अवस्था में लौट जाने का भय ही है।

आलोचकों का कहना है कि सम्प्रभु को समस्त सत्ता सुपुर्द कर एवं लेवियाथन के जन्म से मनुष्य

अपने आपको खत्म कर देता है। वे इस बात के लिए कभी नहीं हो सकते हैं कि उनकी भलाई के बदले संप्रभु उनका उपयोग अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए नहीं करेगा। संप्रभु के गतिविधियों पर किसी प्रकार का नियंत्रण नहीं है।

अन्त में रूसो ने भी हाब्स के संप्रभुता के सिद्धान्त की आलोचना की है। रूसो का मानना है कि जीवन और स्वतंत्रता मनुष्य के लिए प्रकृति के उपहार हैं और इसका परित्याग किसी वैकल्पिक लाभ के लिए नहीं किया जा सकता।

उपर्युक्त आलोचनाओं के बाद भी हम हाब्स के संप्रभुता के सिद्धान्त को निरर्थक नहीं कह सकते वह पहला विचारक है जिसने सम्प्रभुता की पूर्ण व्याख्या की है। उसके समय में इंगलैण्ड में अराजकता की स्थिति थी, संसद और राजा के बीच हमेशा टकराव होता रहता था। इस अराजकता को दूर करने के लिए उसने एक निरंकुश सत्ता की आवश्यकता महसूस की। वह निरंकुश राजसत्ता को सामाजिक सुरक्षा तथा व्यक्ति के कल्याण के लिए आवश्यक समझता है। यदि शासक में इस उद्देश्य की पूर्ति की सामर्थ्य न हो तो वह जनता को उसकी अवज्ञा करने का अधिकार देता है।

Dr. Akhlakh Ahmad
Dept. of Pol. Sc.
DK College, Dumraon.

Scanned with CamScanner